Devbhoomi Journal of Multidisciplinary Research (DJMR)
URL: www.usvv.ac.in/djmr Email: djmr@usvv.ac.in
Volume-1, Issue-1, Jan – June 2023

मानवतावादी चिंतनधारा और 'एकात्म मानववाद'

प्रो. सूर्य प्रसाद दीक्षित
पूर्व विभागाध्यक्ष
हिंदी तथा आधुनिक भारतीय भाषा विभाग
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

मानव को केन्द्र में रखकर विभिन्न प्रकार के विचार-दर्शन समय-समय पर प्रकाश में आए हैं। आधुनिक युग में व्यापक स्तर पर यह महसूस किया गया कि देव-दानव और विभिन्न पशु-पक्षियों की तुलना में मानव जीवन बेहतर है। दार्शनिकों ने मानव प्रजाति को विभिन्न प्रकार की संवेदनाओं और अभिवृत्तियों, जैसे- सुख-दुःख, आशा निराशा, भलाई - बुराई, सौभाग्य- दुर्भाग्य, सुकर्म-कुकर्म आदि सम-विषम लक्षणों का संघात माना है। उसमें इन सभी अन्तर्विरोधों का समन्वय होता रहता है। इसलिए आनुपातिक स्तर पर उसका मध्यमान निकाला जाता है। तभी निर्णय किया जा सकता है कि इनमें कौन मानवीय है और कौन अमानवीय? इस मानवीयता के निर्धारक होते हैं कुछ मूल्य। उन्हें ही मानव का ध्येय-धर्म कहा गया है। वे ही धर्म, अर्थ, काम-मोक्ष हैं। इसे भौतिकवादी (पदार्थवादी) अपने-अपने ढंग से व्याख्यायित करते हैं। वे 'खाओ पीओ मौज उड़ाओ' यानि चारवाकी दर्शन एवं उपभोक्तावाद को अपनी सफलता मान लेते हैं, जबकि हमारी ब्रह्मर्षि चेतना में चित्तवृत्ति के उदात्तीकरण पर जोर दिया जाता है। उनका तर्क है कि मानव एक सर्वोपरि सत्ता है। वह अमृत योनि है। वही परम ऋत् और सत्य है। इसी मानव को क्रमशः विश्व मानव या समष्टि मानव रूप में प्रस्तुत किया जाता है। मानव सत्य को ही विश्व सत्य मान लिया जाता है। इसी भाव से मनुष्य को 'एकमेव अद्वितीयम्' कहा गया है। महाभारत में फलश्रुति के रूप में पितामह से कहलाया गया है- "नहि मानुषात्श्रेष्ठतरः हि कश्चित् [1]। सबके ऊपर मानव तत्त्व है। उसके ऊपर कोई नहीं। गोस्वामी जी ने इसी भाव से कहा था-

'बड़े भाग मानुष तन पावा। सुर दुर्लभ सब ग्रंथन्हि गावा ।। पाइ न जेहि परलोक संवारा।।

साधन धाम मोक्ष कर द्वारा[2]....। इसके पीछे यही शास्त्र-वचन अनुगुंजित हुआ है-

"पुरुषान्न परमकिंचित् सा काष्ठा सा परागतिः ।"[3] इसी को गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ने विश्व मानव का आदर्श परिकल्प माना है। इस मानव को पाशव वृत्ति से बेहतर बताते हुए कामायनी की श्रद्धा कहती है-

पशु से यदि हम कुछ ऊँचे हैं तो भव जल निधि के बनें सेतु ।'

इसी मानव का आह्वान करती हुई श्रद्धा मनु को प्रबोध देती है और- 'विजयिनी मानवता हो जाए की मंगलाशा व्यक्त करती है। हिन्दी कवियों की दृष्टि में यही मानवता का आदर्श रूप है। मैथिलीशरण गुप्त की कई कृतियों में यही मनुष्य विषयक चिन्तन व्यक्त हुआ है, जैसे- "नर हो न निराश करो मन को।"

वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे ।' अथवा 'वह नरता ही क्या बर्बरता जिसके आगे ठहरे।'

इन्हीं सिद्धांतों के सहारे मानवतावाद की अवधारणा विकसित हुई है। यों, मानवतावाद एक अरूप दर्शन है। इसके अन्तर्गत आदर्शवादी शील निरूपण का प्रयास किया गया है। प्राचीन काल में जिसे धर्म अध्यात्म कहते थे. आधुनिक काल में उसकी परिणति मानवतावाद के रूप में हुई है। इस मानव को आधिदैवत सत्ता अथवा भगवत्ता से भिन्न एक ऐसे प्राणी के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो जन्म लेता है, मरता है, विभिन्न परिस्थितियों के बीच से गुजरता है, लेकिन न दैन्य प्रदर्शित करता है और न दैन्य पलायन करता है। मनुष्य की जो बत्तीस (या कुछ अधिक) मनोवृत्तियाँ होती हैं, उनके बीच वह औसत सद्वृत्तियों की खोज करता है। उसका यह मानव धर्म-संवदेन समष्टिमूला अनुभूतियों से प्रेरित रहता है, जिसे बाद में सहज सामान्य मानवता (कामन ह्यूमनिटी) मान लिया गया है। यह मानवतावाद मूलतः स्वच्छन्दतावाद से उपजता है, क्योंकि यह शास्त्रबद्धता और उसकी वैचारिक जड़ता के विरूद्ध खड़ा होता है। दिनकर जी ने 'नया मनुष्य' नामक प्रकरण (कुरुक्षेत्र) में इसकी विस्तृत व्याख्या की है। यह मानवतावाद "मानववादी एवं प्राकृतवादी स्वेच्छाचार से मुक्त मन का उदात्तीकरण करता है। यह "व्यक्तिवाद" से ऊपर हमें परमार्थ के स्तर पर ले जाता है। यह न अन्तमुर्खता का समर्थन करता है, न अहंकार का यह दुःखवादी न होकर आनंदवादी सामरस्थ एवं आस्तिकता को लेकर चलता है। अरबिन्द के 'अन्तश्चेतना / वाद' या 'सोपानवाद' में इसको लोकोत्तर, दिव्य (डिवाइन) भी माना गया है। यह मानवतावाद मार्क्सवादी नास्तिकता की अपेक्षा मनुष्य को क्रान्तद्रष्टा बनाता है। यह पूँजीवादी अर्थतंत्र से चालित औद्योगिक क्रांति के एकाधिकार, 'अराजकतावाद' तथा मार्क्सवाद का विरोधी भी कहा जा सकता है, क्योंकि यह शान्ति सुव्यवस्था और आदर्शवादी आचार संहिता पर जोर देता है।

भारतीय साहित्य में श्रीराम को इसका प्रथम रोल माडल' बनाया गया है। आदि कवि ने पहली बार चतुर्भुजी सत्ता की जगह द्विभुज मानव को अपना नायक बनाया, क्योंकि वे ही उन्हें शान्त, सत्यवादी, शीलवान, सुन्दर, तेजस्वी और जितेन्द्रिय प्रतीत हुए। उनका नमूना लेकर भारतीय साहित्य में अनेक चरित नायकों की सृष्टि की गयी। पश्चिमी साहित्य जहाँ सुपरमैन, 'स्पाइडर मैन' अर्थात् "मैजिकल करेक्टर" रचने में व्यस्त रहा, वहाँ भारतीय साहित्य एक शाश्वत् सनातन और महत्तम गुणों से सम्पन्न मनुष्य की रूप-रचना में संलग्न रहा। यही कारण है कि मनुष्य ही हमारे साहित्य का मुख्य आलम्बन बन गया है। इससे मानवतावाद गरिमा मंडित होता रहा है। इस मानवतावादी चिंतन में क्रमशः दो अतिवादी धारणाएँ प्रकाश में आयीं। एक "लघुमानववाद" और दूसरा "पूर्ण मानवतावाद" । पश्चिम के कई साहित्यकारों ने यह माना कि साधारण अर्थात् नगण्य मानव का भी अपना महत्त्व है। उसी को 'आम आदमी' कहा गया। पहले इसे

'सर्वहारा' कहा गया था। इन दिनों "हाशिए का वर्ग" कहा जा रहा है। नई कविता से जुड़े हुए कुछ कवियों ने इस 'लघु मानव' का भरसक महत्त्व प्रतिपादित किया है। गिरिजा कुमार माथुर की एक चर्चित कविता है-

"हम सब बौने हैं....

क्योंकि यह जमाना हमें चाहता, हम बौने रहें।

वरना मिलेंगे कहाँ- वक्ता को श्रोता

नेता को पिछलगुए,

बुद्धिजनों को पाठक,

आन्दोलनों को भीड़

धर्मों को भक्त

सम्प्रदायों को मतिमंद

राज्यों को क्लर्क

कारखानों को मजदूर!

हम सब युग-युग से इन्हीं के लिए जीते हैं

क्रीतदास हैं हम, इतिहास वसन सीते हैं

इतिहास इनका है

हम सब तो स्याही हैं

विजय मिले इनको

हम घायल सिपाही हैं।

इस भाव से प्रेरित हिन्दी में अनेक कविताएँ रची गयी हैं। यह लघु मानववाद सर्वोदय से भिन्न है। इसमें पराभव का बोध अधिक है। 'सर्वोदय' और 'अन्त्योदय' में दुःख- दैन्य के चित्रण की अपेक्षा 'योगक्षेम का भाव ज्यादा है। लघु मानववाद कटु यथार्थवाद से प्रेरित है। उस पर "प्राकृतवाद" हावी है। उसमें मानव जाति का विकृत और वन्य (आदिम) रूप

चित्रित किया गया है। वह "दादावाद" से भी प्रभावित दिखाई देता है। इसकी प्रतिक्रिया में "अतिमानववाद" की स्थापना की गयी है। यह अतिमानव एक ओर शक्तिमान के रूप में प्रस्तुत किया गया, जो आसामान्य कला-करतब दिखाता है। दूसरी ओर उसे विराट सत्ता के 'रहस्यवाद' संकुल स्वरूप से प्रेरित बताया गया है। महर्षि अरबिन्द ने एक ऐसे 'चैत्य पुरुष' (दिव्य मानव) की परिकल्पना की है, जो पूर्णत्व की इच्छा से परिचालित होकर सुख-दुःख के ऊपर पहुँच जाता है। वह जड़ता की स्थिति से ऊपर उठकर ब्रह्मत्व की स्थिति प्राप्त कर लेता है। उसमें मैटर और स्पिरिट दोनों का योग है उसी के समानान्तर "अधिमानव" की कल्पना की गयी, जो अविद्या के कारण "ओवर माइन्ड' हो जाता है जनजीवन में इसकी परिणति कभी-कभी 'आमानुष' के रूप में होती है। भोगवाद के प्रभाववंश वह 'ब्रूटकल्चर' को आत्मसात कर लेता है। डार्विन ने जिस जैव प्राणी की विवेचना की थी और फ्रायड ने दमित यौन के सहारे जिसे नाटकीय प्राणी रूप में प्रस्तुत किया था, वह मानव सम्प्रति विधेयात्मक चिन्ता का विषय बना हुआ है मार्कस से मुक्ति पाने के उद्देश्य से ही मानवतावाद की यह धारणा विकसित हुई है। यह मानव न मात्र दिव्य सत्ता है और न केवल ऐहिक प्राणी। यह मानवीय मूल्यों मर्यादाओं का पोषक है। यह विधि-निषेध दोनों को लेकर चलता है। नव मानवतावादी साहित्यकारों का मत है कि मनुष्य केवल देह नहीं है। उसकी स्थिति आत्मा तक है। वह नियति वादी हताशा, अनैतिकता, निरपेक्षता, अमानवीय यान्त्रिकता और 'अतियथार्थ' से ऊपर उठकर वैज्ञानिक आधुनिक दृष्टि लेकर चलता है। इसके अन्तर्गत यह माना गया है कि मनुष्य ही प्रतिमान है वह पाशबद्ध और लोकोत्तर, दोनों वर्गों के मध्य "नव अध्यात्म" का अनुयायी है। प्रसाद जी ने 'कामायानी' में इसी नवमानव का उल्लेख करते हुए लिखा था- क्या यही तुम्हारी होगी, उज्ज्वल नव मानवता ।'[5]

तात्पर्य यह है कि मानव को लेकर विभिन्न प्रकार के मत-मतान्तर व्यक्त किए गए। है इसी क्रम में उल्लेखनीय है पं0 दीनदयाल उपाध्याय जी का 'एकात्म मानववाद' दर्शन, जिसे एकान्तवाद भी कहा गया है। यह दर्शन साम्य और एकत्व पर जोर देता है। इसमें जाति और सम्प्रदाय गत संकीर्णता का विरोध किया गया है। रस्किन ने "अन टु द लास्ट" का जो दर्शन प्रतिपादित किया था, उसी को उपाध्याय जी ने 'अन्त्योदय' से जोड़कर प्रस्तुत किया है। इसमें साधन और साध्य की शुचिता का विशेष ध्यान रखा जाता है। आज आवश्यकता है ऐसे चरित्र की जो अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह, निष्ठा और सादगी से परिपूर्ण हो।

'एकात्म मानववाद' में मशीनीकरण की मर्यादा निर्धारित की गयी है। विश्व व्याप्त औद्योगीकरण के कारण हमारे समाज में दुर्भाग्यपूर्ण विषमता भर गयी है। उपाध्याय जी ने अनेक तथ्य तर्क और आँकड़े देकर यह सिद्ध किया था कि यहां 70 प्रतिशत जनता की दैनिक आय मात्र 18 रुपये हें और हममें हर व्यक्ति के ऊपर लगभग 1000 रुपये का कर्ज है। उन्होंने सचेत किया था कि भोगवादी जीवन से लिप्त रहने का कुपरिणाम होगा प्राकृतिक आपदाओं अर्थात् सुनामी, बाढ़, सूखा, संक्रामक रोग जैसे प्रकोप। यदि यही जीवन शैली चलती रही तो सारे प्राकृतिक संसाधन आने वाले कुछ दशकों में क्षीण हो जाएंगे। पचास वर्ष बाद किसी को तेल और कोयला नहीं मिलेगा। फिर हमारा पूर्ण विमानीकरण हो जाएगा।

प्रदूषण की समस्या इतनी भयानक हो जाएगी कि सांस ले पाना कठिन हो जाएगा, इसलिए आवश्यक है कि हम प्रकृति की ओर लौटें। उत्पीड़न बन्द करें अर्थात् दास-दासियों की बिक्री या आहरण, बंधुआ, मजदूर, बालश्रम, जीव वध आदि पर पूरी कट्टरता के साथ पाबन्दी लगाएं। निःशस्त्रीकरण, विशेषतया आणविक अस्त्रों का परित्याग पहली शर्त है। हमें मानवाधिकारों का विस्तार करना होगा। 'नव अध्यात्म' को वरण करना होगा। हमें नव सौन्दर्यशास्त्र से जुडना होगा। उपाध्याय जी का सुझाव था कि ग्रामोदय योजना को पूरी निष्ठा के साथ लागू किया जाए। उन्होंने वरीयता निर्धारित करते हुए कहा था कि मूल्यपरक शिक्षा की व्यवस्था सबसे पहले की जाए, जिससे व्यक्तित्व विकास सुनिश्चित हो सके और फिर लोक सेवा का माहौल बने, लोकशील की स्थापना हो और शान्ति का वातावरण स्थापित हो। इसके लिए मातृभाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाना जरूरी है। साथ ही स्वदेशी व्रत अपनाना जरूरी है। उन्होंने आर्थिक विकेन्द्रीकरण पर बड़ा जोर दिया है। इसी से हमें पूँजीवाद का बेहतर विकल्प प्राप्त होगा। उन्होंने सर्व धर्म समन्वय को अपरिहार्य माना है। जब तक धार्मिक सहिष्णुता तथा एकला नहीं स्थापित होगी, तब तक अनेकता में एकता का स्वप्न साकार नहीं हो पाएगा। आज 'सोशल मीडिया का जो दौर चल पड़ा है, इसमें अपराधी वृत्ति को बढ़ावा मिल रहा है। आवश्यकता यह है कि उसके माध्यम से चित्रित होने वाली अश्लीलता को रोका जाए और अपराधों की खोज में उससे सहायता ली जाए। हमें सतत परिवर्तन के लिए तैयार रहना होगा। इसके लिए नई आचार संहिता अर्थात् विकासात्मक राजनीति, संतुलित अर्थशास्त्र, उदारतावादी जीवनदर्शन और मूल्य परक साहित्य को प्रश्रय देना होगा। इस दर्शन के अन्तर्गत बालक, बुद्ध और नारी के प्रति संवेदनशील होने की आवश्यकता बतायी गयी है। उपाध्याय जी ने अपने व्यावहारिक जीवन में चार सूत्रों को पूरी दृढ़ता के साथ अपनाया था- आदर्शवाद, प्रयोजनवाद, राष्ट्रवाद और मानवतावाद । इसे वे शुद्ध हिन्दू मत मानते थे जीवन में जितनी सरलता, सहजता प्रकृति परायणता और सेवा भावना होगी, उतना ही उपयोगी और उदार जीवन हम जी सकेंगे और तभी हम विश्व मानव के स्तर पर पहुँच सकेंगे। प्रसाद जी की मंगलाशा थी- "सब भेद भाव वा भुलाकर सुख-दुःख को सत्य बनाता। मानव कह रे यह मैं हूँ यह विश्व नीड़ बन जाता।"[6] यह जीवन दर्शन एकात्म मानववाद के सहारे ही प्रतिफलित हो सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ-

1. महाभारत, गीताप्रेस, गोरखपुर
2. रामचरितमानस, उत्तरकाण्ड, गीताप्रेस, गोरखपुर
3. कठोपनिषद् डॉ. पुष्पा गुप्ता, त्रितीय बल्ली, पृष्ठ संख्या 90
4. प्रसाद ग्रंथावली खण्ड 4 पृष्ठ संख्या 469
5. वही पृष्ठ 540
6. वही पृष्ठ 699